﴿إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ﴾ (سورۂ حجر آیت: ۹)

''हमने ही क़ुरआन को उतारा है और हम इसको अवश्य सुरक्षित रखने वाले हैं।''

समाज सुधार प्रकाशण श्रंखला 19

क़ुरआन की किसी आयत या शब्द को क़ुरआन से निकालने का दावा

सुप्रीम कोर्ट की दृष्टि में Absolutely Frivolous, आधारहीन और लचर है

मौलाना अरशद मदनी

अध्यक्ष, जमीअत उलमा-ए-हिन्द

प्रकाशक

जमीअत उलमा-ए-हिन्द

1-बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-2

क़ुरआन की किसी आयत या शब्द को क़ुरआन से निकालने का दावा

सुप्रीम कोर्ट की दृष्टि में Absolutely Frivolous, आधारहीन और लचर है

أحمدهٗ واصلي علىٰ رسوله الكريم.

अल्लाह की किताबें जो उसने अपने बंदों के मार्गदर्शन के लिये दुनिया में उतारी हैं और वह पढ़ी-पढ़ाई जाती भी हैं, तीन हैं, 'तौरात', 'इंजील' और पवित्र क़ुरआन। चौथी किताब जिसका ज़िक्र क़ुरआन में आया है वह 'ज़बूर' है लेकिन अब इसको पढ़ने-पढ़ाने वाला कोई समूह लगता है कि धरती पर नहीं है, जिस तरह 'तौरात' हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को और 'इंजील' हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को दी गई इसी तरह 'पवित्र क़ुरआन' हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया गया, फिर यह भी एक सच्चाई है कि अगरचे तीनों उपरोक्त पुस्तकें अल्लाह की भेजी हुई हैं और यहूदी, ईसाई और मुसलमान तीनों उम्मतें उनको अपने सिर और आँखों पर रखते हैं लेकिन मुसलमानों को जितना गहरा संबंध और रुचि अपनी किताब पवित्र क़ुरआन से है यहूदी और ईसाई लोगों को अपनी किताब से नहीं है, चुनांचे दुनिया में केवल क़ुरआन ही के हाफ़िज़ मुसलमान मिलते हैं, तौरात और इंजील के हाफ़िज़ यहूदी व ईसारा नहीं।

दूसरी किताबों के मुक़ाबले में पवित्र क़ुरआन की विशेषता यह भी है कि तौरात अ इंजील लिखी-लिखाई किताबें उतारी गईं लेकिन क़ुरआन आवश्यकता अनुसार एक-एक, दो-दो आयतें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अल्लाह की इच्छा के अनुसार 23 वर्ष में उतारा गया

है, और आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम कुछ नियुक्त सहाबा को, जो लिखना जानते थे, उनको बुला कर लिखा देते थे जो एक जगह अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर सुरक्षित रहता था लेकिन चूंकि वही आने और अल्लाह की ओर से पवित्र क़ुरआन लाने का कोई निश्चित समय नहीं था, यात्रा में रहते हुए भी क़ुरआन की आयतें और आदेश आते रहते थे इस लिये किसी एक चीज़ पर लिखा हुआ नहीं था। कुछ क़ुरआन सफैद पत्थरों पर, कुछ खजूर के फट्टों पर और कुछ सूखी झिल्ली पर लिखा हुआ था, जहां जिस समय जो चीज़ उपलब्ध हो गई उस पर लिख कर सुरक्षित कर लिया गया।

फिर चूंकि क़ुरआन की आयतें नबी के पास फरिश्ता लेकर आता था इस लिये वह आपके सीने में सुरक्षित रहता था, आपके अतिरिक्त कोई अन्य उसको नहीं जानता था इस लिये क़ुरआन के सबसे पहले पढ़ाने वाले आप ही थे और शुरू के सहाबा ने आप ही से क़ुरआन और इसके अर्थ सीखे और आप ही ने पढ़ाए, कुछ सहाबा ऐसे माहिर हो गए कि ख़ुद नबी ने उनकी महारत की घोषणा कर दी, गोया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को इस ओर ध्यान दिला दिया कि मेरे बाद यह वह लोग हैं जो क़ुरआन के माहिर हैं, जिनको क़ुरआन सीखना है उनसे सीखें, यह लोग क़ुरआन के शब्दों और अर्थ को जानने में मेरे विश्वसनीय हैं।

यह अनगिनत सहाबा जिन्होंने क़ुरआन ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सीखा था, नमाज़ों में और ख़ासतौर पर रात के अंधेरे में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा और तरीक़े के अनुसार पढ़ा करते थे और प्रति दिन ऊंची आवाज़ में पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र ज़बान से क़ुरआन सुना करते थे, और खासतौर पर रमज़ान के पवित्र महीने में सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन और ख़ुद नबी करीम का क़ुरआन शरीफ पढ़ना बहुत अधिक बढ़ जाता था, बल्कि हर रमज़ान के महीने में जिबरईले अमीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास रोज़ाना आते थे और रसूलुल्लाह के साथ दोनों क़ुरआन की इतनी मिक़दार का दौर किया करते थे कि पूरे महीने में एक

क़ुरआन पूरा हो जाता था और जो आख़िरी रमज़ान गुज़रा है उसमें दो दौर हुए और दो क़ुरआन ख़त्म हुए, जिसका मतलब है कि 32 वर्ष के नबुव्वत के दौर में जिबरईले अमीन के साथ 24 बार दौर हुआ है। यह सारा प्रोग्राम अल्लाह की ओर से अल्लाह के इस वादे को पूरा करने के लिये किया जा रहा था जिसको सूरह नम्बर 15 की आयत नम्बर 9 में किया गया था:-

﴿إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُوْنَ﴾

''हमने ही क़ुरआन को उतारा है और हम इसको अवश्य सुरक्षित रखने वाले हैं।''

यहां एक और चीज़ भी ध्यान योग्य है कि रहती दुनिया तक मुसलमानों का जो वर्ग अपने दिलों में सबसे अधिक ख़ुदा का ख़ौफ़ रखने वाला है, सबसे अधिक इस्लाम पर मरने मिटने वाला है, सबसे अधिक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत रखने वाला है और प्रत्यक्ष रूप से किसी माध्म के बिना अल्लाह के रसूल से क़ुरआन और दीन को लेने वाला और समझने वाला है वह वर्ग सहाबा का है, ख़ुदा उन से राज़ी हो।

यह सोचने की बात है कि जब आज 1400 वर्ष के बाद दुनिया की मुहब्बत का मारा मुसलमान अल्लाह की किताब क़ुरआन से ख़ुदा की दूसरी किताबों को मानने वालों के मुक़ाबले बहुत अधिक रुचि और आस्था रखता है तो उस ज़माने में सहाबा को क़ुरआन से कितनी रुचि और मुहब्बत होगी। जिस क़ुरआन के आज पूरी दुनिया में करोड़ों मुसलमान हाफ़िज़ हैं तो उस समय कितने सहाबा क़ुरआन के हाफ़िज़ होंगे और रात-दिन क़ुरआन की तिलावत करके ख़ुदा की रहमत की निकटता प्राप्त करते होंगे।

मुहद्दिसीन लिखते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अनहु के दौरे खिलाफ़त 11 हिज्री में जंगे यमामा में लगभग 700 हाफ़िज़ सहाबा शहीद हुए हैं जिसके बाद अल्लाह ने सबसे पहले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अनहु के दिल में यह बात डाली कि अगर इसी तरह क़ुरआन के हाफ़िज़ इस्लाम के अस्तित्व के लिये अपनी क़ीमती जानों का नज़राना पेश करते रहे तो क़ुरआन का सुरक्षित रहना कहीं मुश्किल न हो जाए, तब उन्होंने

पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अनहु से फ़रमाया कि क़ुरआन की सुरक्षा अगरचे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने ज़माने में करा दी है और वो विभिन्न चीज़ों पर लिखा हुआ आपके घर में सुरक्षित भी है लेकिन इसकी और अधिक सुरक्षा के लिये किताबी शक्ल में जमा करा देना अति आवश्यक मालूम हो रहा है। यह सुझाव पहली बार में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अनहु ने स्वीकार नहीं किया और यह फ़रमाते रहे कि जो काम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने समय में नहीं किया उसको अबू बकर कैसे करे, लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अनहु के दिल को अल्लाह ने इस चीज़ के लिए खोल दिया था, इस लिये वह बराबर आग्रह करते रहे अर्थात दलीलें प्रस्तुत रहे यहां तक कि अल्लाह ने पहले खलीफ़ा के मुबारक सीने को भी दूसरे खलीफ़ा की राय पर खोल दिया, फिर इन दोनों ने हज़रत ज़ैद बिन साबित अंसारी रज़ियल्लाहु अनहु से आग्रह करके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में सुरक्षित पवित्र क़ुरआन को किताबी शक्ल में एकत्रित करने की ज़िम्मेदारी सौंपी और फ़रमाया कि अल्लाह के रसूल का आप पर पूर्ण विश्वास और भरोसा था क्योंकि आप क़ुरआन के लिखने वाले थे। अल्लाह के नबी पर फरिश्ता जो क़ुरआन की आयतें लाता था रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अधिकतर उसको आपसे लिखवाते थे इस लिये हम भी आप पर विश्वास करते हैं।

यहां यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिये कि अनगिनत सहाबा के सीनों में पवित्र क़ुरआन मौजूद है और जो लोग लिखना जानते हैं वह इसको लिख कर भी अपने साथ रखते थे, चुनांचे ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अनहु ने अपनी याददाश्त, सहाबा के सीनों में सुरक्षित और विभन्नि चीज़ों पर लिखा हुआ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में सुरक्षित रखे हुए क़ुरआन को मिला कर और सहाबा से एक एक आयत को सुन-सुन कर पूरी सावधानी के साथ किताबी शक्ल में जमा कर दिया।

उस समय तक पवित्र क़ुरआन के हाफ़िज़ अगरचे अनगिनत सहाबा और ताबईन थे लेकिन किताबी शक्ल में लिखा हुआ पूरे क़ुरआन का यही एक नुस्ख़ा था जो हज़रत अबू बकर व उमर रज़ियल्लाहु अनहुमा की निगरानी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमा कराए हुए

क़ुरआन से और सहाबा के सीनों में महफ़ूज एक-एक आयत को उस से मिला कर सुरक्षित किया गया था जिसको 23 वर्ष तक रसूलुल्लाह की मुबारक ज़बान से सुनते सुनाते और ख़ुद पढ़ते पढ़ाते आरहे थे।

इस किताबी शक्ल में असल से नक़ल किये हुए नुस्ख़े को फिर अल्लाह के नबी के घर में हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अनहा के पास सुरक्षित रख दिया गया और क़ुरआन शरीफ के पढ़ने पढ़ाने का सिलसिला उन क़ुरआन के हाफ़िज़ हज़ारों सहाबा और ताबईन से चलता रहा जिन्होंने क़ुरआन की शिक्षा ही को अपनी ज़िन्दगी का मशग़ला बनाया था और इसी को वो अपनी दुनिया और आख़िरत का सबसे मुबारक और मक़बूल मशग़ला जानते थे, क्योंकि अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह संदेश देकर दुनिया से गए थे:-

﴿خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ﴾

''तुम में सबसे अच्छा वो है जिसने क़ुरआन को पढ़ा और पढ़ाया।''

इस लिये एक वर्ग ने क़ुरआन के पढ़ने और पढ़ाने ही को अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया था यहां तक कि लगभग दो वर्ष और 6 महीने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अनहु की ख़िलाफ़त का दौर गुज़रा और इसके बाद लगभग 10 वर्ष हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अनहु की ख़िलाफ़त का दौर गुज़रा और इसी तरह मुसलमान लाखों की संख्या में क़ुरआन सीखते और सिखाते रहे यहां तक कि हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अनहु का ज़माना आया और उनकी ख़िलाफ़त का ज़माना लगभग 12 वर्ष है, उन्होंने अपने ज़माने में इस्कंदरिया, साबूर, अफ़्रीक़ा, क़बरस, रोम के तटीय क्षेत्र, फारस, ख़ोज़िस्तान, तबरिस्तान, किरमान, सजिस्तान आदि को फतह किया और लाखों की संख्या में लोग इस्लाम की शिक्षा और मुसलमानों के व्यवहार और चरित्र को देखकर और बरत कर इस्लाम में दाख़िल हो गए तो विभिन्न कारणों को ध्यान में रखते हुए इसकी ज़रूरत पड़ी कि क़ुरआन के विभिन्न नुस्ख़े दुनिया के विभिन्न देशों को भेजे जाएं ताकि वहां के मुसलमान क़ुरआन को सीख सकें, क्योंकि इस्लाम का आधार यही अल्लाह की किताब है, इन्सान इसको जिंदगी में उतारे बगैर अल्लाह की पूरी बंदगी का नमूना नहीं बन सकता, चुनांचे

लगभग 18 या 19 वर्ष के बाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अनहु ने क़ुरआन शरीफ़ के उस पुराने नुस्ख़े को जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में सुरक्षित था, उम्मुलमोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अनहा से मंगवाया और कातिबे वही हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अनहु ही को यह ज़िम्मेदारी दोबारा दी क्योंकि उन्होंने पहली बार किताबी शक्ल में क़ुरआन को जमा करने में जो अति सावधानिक तरीक़ा अपनाया था वो बहुत विश्वसनीय था और विशेषकर मुसलमानों में सबसे उच्च और श्रेष्ठ अर्थात अबू बकर व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का पसंदीदा तरीक़ा था, और उनके साथ और तीन क़ुरैशी सहाबा को भी लगाया ताकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस तरह क़ुरआन की तिलावत फ़रमाते थे उसी तरह जमा करने में उनकी सहायता करें, उन्होंने इस बार भी क़ुरआन को किताबी शक्ल देने में वही तरीक़ा पुनः अपनाया जो पहले अपना या था।

इस बात को यहां ध्यान में रखना चाहिये कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुनिया से गए हुए अगरचे लगभग 20 वर्ष गुज़र गए थे लेकिन इस्लाम जंगल की आग की तरह दुनिया में फैल रहा था, पूरी पूरी कौमें और देश इस्लाम में दाख़िल हो रहे थे, बड़े बड़े सहाबा और ताबईन जगह-जगह क़ुरआन पढ़ा रहे थे और असंख्य लोग क़ुरआन पढ़ रहे थे और लाखों ऐसे लोगों के सीनों में क़ुरआन सुरक्षित था जिन्होंने ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से क़ुरआन सीखा था या उनके शिष्यों से क़ुरआन पढ़ा था और अपनी ज़िंदगी में उतारा था, ऐसे माहौल में हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अनहु ने क़ुरआन शरीफ़ के कुछ नुस्ख़े अति सावधानी से तैयार कराए और उनको शाम, कूफ़ा, बसरा आदि में भेज दिया और एक नुस्ख़ा मदीना मुनव्वरा में सुरक्षित रखा गया और जो पहला नुस्ख़ा था उसको उम्मुलमोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अनहा को वापस कर दिया गया।

यह पवित्र क़ुरआन की सुरक्षा का एक संक्षिप्त इतिहास है जो बुख़ारी शरीफ़ आदि हदीस की विश्वसनीय किताबों से लिया गया, तो क्या क़ुरआन से मोह के इस माहौल में और उम्मत के सबसे अधिक विश्वसनीय लोगों की मौजूदगी में कोई आदमी दावा कर सकता है कि

पवित्र क़ुरआन में हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अनहु ने कमी और ज़्यादती की है, अगर यह दावा लचर, बोग्स और आधारहीन नहीं है तो फिर क्या है।

यह सोचना चाहिये कि आज जब कि दुनिया में करोड़ों मुसलमानों के सीनों में क़ुरआन सुरक्षित है, अगर आज इस्लाम का कोई दुश्मन क़ुरआन में कमी ज़्यादती कर डाले, किसी एक आयत की जगह अपनी ओर से बना कर दूसरी आयत रखदे या क़ुरआन की आयत की जगह को तबदील कर दे तो क्या वो सफल हो सकता है? अगर नहीं हो सकता और अवश्य नहीं हो सकता तो उस ज़माने में कैसे हो सकता था जब कि सहाब-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन ज़िंदा थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारी हुई अल्लाह की किताब पर जिंदगी को ढालना और पढ़ना पढ़ाना उनका सबसे पसंदीदा अमल था।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अनहु पर क़ुरआन करीम में कमी ज़्यादती का इल्ज़ाम लगाने वाले यह नहीं सोचते कि अगर यह इल्ज़ाम सही माना जाए तो पहले तो अल्लाह पर इल्ज़ाम आता है कि उसने जो वादा सूरह नम्बर 15, आयत नम्बर 9 में क़ुरआन की सुरक्षा का किया था वह उसको पूरा न कर सका और हज़रत उस्मान के सामने अल्लाह बेबस हो गया।

दूसरी बात यह भी ध्यान योग्य है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अनहु के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अनहु और बाद के इमामों का ज़माना आता है जो इसी क़ुरआन को पढ़ते पढ़ाते रहे और क़ुरआन की तसहीह नहीं कर सके, मैं नहीं समझता कि अहले बैत पर इस से बड़ा कोई इल्ज़ाम लगाया जा सकता है, इसलिये पवित्र क़ुरआन में न कोई बदलाव हुआ है और न क़यामत तक होगा, कमी ज़्यादती का दावा करने वाला अपनी जिहालत का सबूत दे रहा है इस के अतिरिक्त और कुछ नहीं, इसी को 12 अप्रैल 2021 को सुप्रीमकोर्ट की तीन जजों की बैंच ने ABSOLUTELY FRIVOLOUS, लचर और आधारहीन कहा है।

❑❑